सँजोने हेतु आशीर्वाद

शनिवार, २७ जून २०२०

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

जीवन जीने के लिए है।
अज्ञान में जीना
या ज्ञान के साथ जीना
तुम्हारे जीवन को आज और हमेशा के लिए परिभाषित करता है।

जीवन में उद्देश्य होना ही चाहिए।
तुम्हें अपनी नियति को पूरा करने के लिए
उद्देश्य का मानस-चित्रण करना
और उसे कार्यान्वित करना ज़रूरी है।

जीवन परमात्मा की ओर से एक उपहार है।
परमात्मा करुणाशील हैं।
परमात्मा के दर्शन
सभी में विद्यमान दिव्य प्रकाश के रूप में करने चाहिए।

जीवन मीठा है और जीवन कड़वा है।
मनुष्यों द्वारा किए गए कर्मों के
पेचीदा ताने-बाने में
मिठास और कड़वाहट, दोनों बुनी हुई हैं।

जीवन सुन्दर है और जीवन कुरूप है।
सौन्दर्य और कुरूपता दो परिणाम हैं,
इस बात के कि तुम कैसे
जीवन के पहाड़ों और उसकी घाटियों को,

नदियों और नहरों को,
समुद्रों और पोखरों को पार करने का निर्णय लेते हो।

जीवन सरल है और जीवन जटिल है।
सरलता और जटिलता
मानसिक संकल्प-विकल्प की उपज हैं
जो या तो सहजता से श्वास लेने देते हैं
या श्रमसाध्य श्वास का अनुभव कराते हैं।

जीवन निष्पक्ष है।
पर फिर, यह सृष्टि कितनी प्राचीन है।
तुम्हें अतीत, वर्तमान और भविष्य को सँभालना है
इनसे ऊपर रहकर,
तुम कैसे तैरते रह सकते हो, यह सीखकर
और उड़ान भरने का साहस कर।

जीवन एक तरीक़ा है, भगवान की उदारता को दर्शाने का।
यदि कोई, पलक झपकते ही,
तुमसे पीठ फेर लेता है
तो तुम भी घूम-घूमकर
और उन्मुक्तता से नृत्य करते हुए
उन्हें हर्षोल्लसित कर सकते हो।

जीवन दिव्य है और जीवन वैभवशाली है।
दिव्यता और वैभव उस जीवन में अन्तर्निहित हैं
जो अपना स्वर आकाश तक पहुँचाता है,
और इस पृथ्वी पर जो भूखे हैं, उन्हें भोजन कराता है।

जीवन दयालु है और जीवन कृपा से भरपूर है।
जब मनुष्य एक-दूसरे के साथ अपनी घनिष्ठता में
और परस्पर आदर-सम्मान में
आलोक को और सत्य की वाणी को खोज लेते है तो
दयालुता और कृपा हाथ में हाथ डाले नृत्य करती हैं।

जीवन ईश्वर की साधना के लिए समर्पित है,
ईश्वर को प्राप्त करने की साधना।
साधना गुरु-प्रदत्त एक ख़ूबसूरत उपहार है,
एक ऐसा उपहार जो तुम्हारे अवधान को
पुनः उस ओर ले जाता है जो एक परितृप्त क़िस्मत को जीने के लिए
सर्वाधिक हितकारी है।

जीवन गुरुप्रेम से आलोकित है।
इसलिए, अपने मन, हृदय और अपनी आत्मा के प्रति जागरूक बनो।
दिव्य प्रकाश से परिपूर्ण, वे प्रखरता से जगमगाते हैं।

अपने जीवन के साथ मैत्री करो।
यह संसार मृत्यु से कुछ अधिक ही अन्तरंग होता जा रहा है,
इसे कुछ ज़्यादा ही स्वीकार कर रहा है।

लोग यह भूलने लगे हैं कि जीना एक कला है,
और यह कि जीने का मतलब है,
उस कल्याणकारी शक्ति की सेवा में जीना जिसमें वे विश्वास रखते हैं—
उनके लिए भगवान, जो भगवान में विश्वास रखते हैं,
उनके लिए प्रकृति, जो प्रकृति में विश्वास रखते हैं,
उनके लिए मानवता,
जो संसार की ख़ुशहाली में विश्वास रखते हैं।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।